7 नए विचार और समाज सुधार की कोशिश

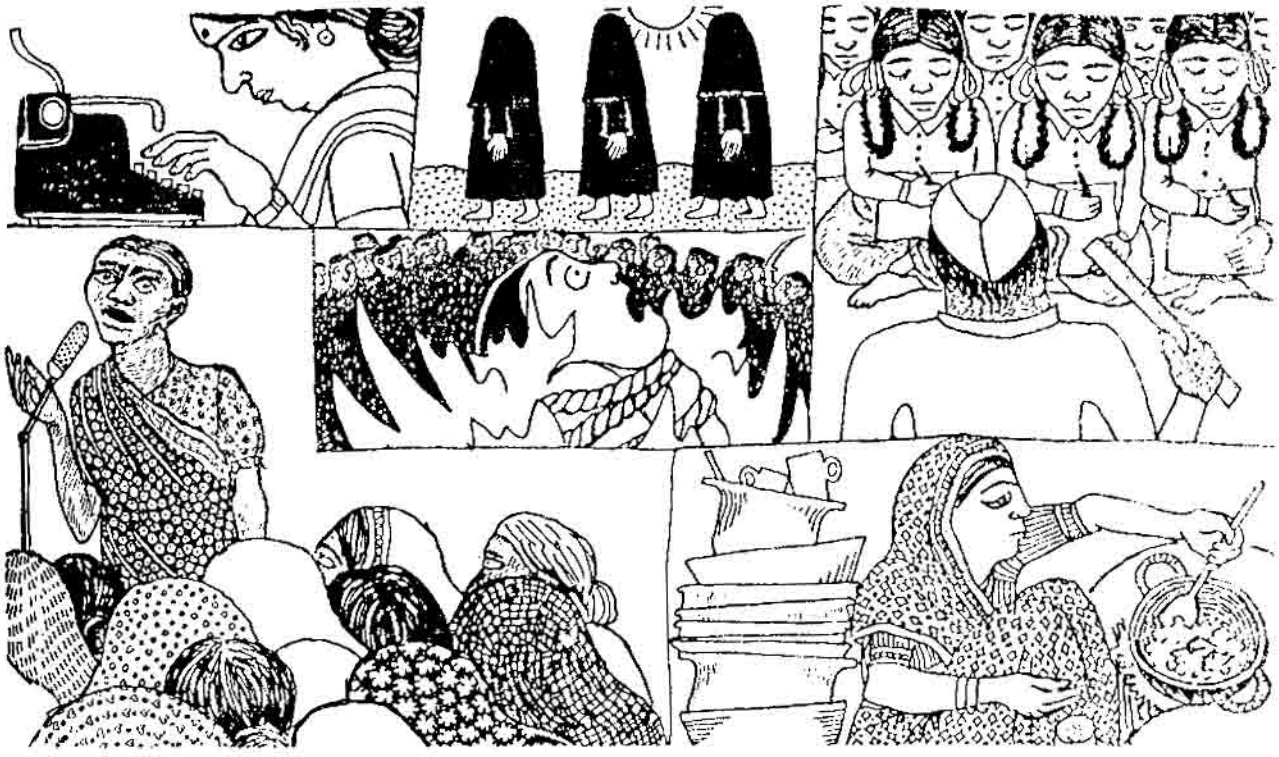

ऊपर महिलाओं के बारे में कई चित्र बने है।

तुम्हारे विचार में इनमें से कौन सी बातें 200 साल पहले हो ही नहीं सकती थीं?

महिलाओं की स्थिति में अंग्रेज़ शासन के समय से बहुत बदलाव आए हैं।

हमारे विचार सिर्फ महिलाओं के प्रति ही नहीं, परंतु जातपात, धर्म, ईश्वर आदि के बारे में भी काफी बदले हैं।

आओ, देखें कि अंग्रेज़ों के समय में नए विचार कैसे फैले और समाज सुधार की क्या कोशिशें हुईं।

समाज की रीतियों को सुधारने की कोशिश अपने इतिहास में समय-समय पर होती रही है। अंग्रेज़ों के समय में ये कोशिशें विशेष रूप से हुईं।

अंग्रेज़ी शिक्षा की मांग

शुरू में अंग्रेज़ों ने पाठशालाओं और मदरसों को बढ़ावा दिया। पाठशालाओं में संस्कृत में शास्त्रों, पुराणों और व्याकरण का अध्ययन कराया जाता था और मदरसों में कुरान व अन्य धार्मिक ग्रंथों को पढ़ाया जाता था। जो भारतीय लोग अंग्रेज़ों के संपर्क में आए थे और इंग्लैंड में दी जाने वाली शिक्षा की जानकारी रखते थे, वे इस बात से खुश नहीं थे कि अंग्रेज़ भारत में पारंपरिक शिक्षा को बढ़ावा दें। ये वे भारतीय थे जो अंग्रेज़ सरकार के प्रशासन में नौकरी करने लगे थे, वकालत करते थे, या अंग्रेज़ी व्यापारियों के साथ काम करते थे। ये लोग अंग्रेज़ों के विचारों से प्रभावित हुए और चाहने लगे कि अपने समाज में भी बदलाव आए। वे चाहते थे कि अंग्रेज़ी शिक्षा भारत में फैलाई

जाए ताकि भारतीय लोग नए ज्ञान विज्ञान को सीखे और अंग्रेज़ों के समान विकास करें।

अंग्रेज़ी कचहरी में काम कर रहे भारतीय : इन्होंने सबसे पहले अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त की

उनमें से एक थे राजा राम मोहन राय। वे बंगाल के एक ज़मींदार परिवार के थे। एक बार जब उन्हें पता चला कि अंग्रेज़ सरकार कलकत्ता में एक संस्कृत पाठशाला शुरू करवा रही है तो उन्होंने अंग्रेज़ सरकार को एक ज़ोरदार चिट्ठी लिख कर अंग्रेज़ी शिक्षा की मांग की। उन्होंने लिखा - *"हमें पता चला है कि सरकार पंडितों के संरक्षण में एक संस्कृत पाठशाला खोल रही है जिसमें ऐसा ज्ञान दिया जाएगा जो भारत में वैसे ही चला आ रहा है। ऐसी पाठशाला युवाओं के दिमाग में सिर्फ व्याकरण के बारीक नियम और दूसरे लोक का ज्ञान भर सकती है और ऐसा कुछ नहीं दे सकती जो विद्यार्थी या समाज के लिए व्यावहारिक रूप से उपयोगी हो।*

चूंकि सरकार का उद्देश्य स्थानीय लोगों को बेहतर बनाना है, इसलिए वह गणित, दर्शन शास्त्र, रसायन शास्त्र, शरीर रचना शास्त्र और दूसरे उपयोगी विज्ञान को बढ़ावा दे। यह काम यूरोप में शिक्षित व्यक्तियों को नियुक्त करके और पुस्तकों व उपकरणों से सुसज्जित कॉलेज बनाकर पूरा किया जा सकता है।" कलकत्ता 11 दिसम्बर 1823.

राजा राम मोहन राय की तरह ही देश भर में हज़ारों अन्य लोगों ने अंग्रेज़ सरकार पर दबाव डाला कि वह भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा की व्यवस्था तुरंत करे। लोगों को यह विश्वास हो गया था कि विज्ञान की जानकारी के कारण ही यूरोप के देशों का दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले में ऊंचा स्थान है। भारत के पिछड़ेपन का यही कारण है कि यहां पर वैज्ञानिक शिक्षा की कमी है। भारत के लिए यह पिछड़ापन दूर करके यूरोपीय देशों के बराबर होना सबसे महत्वपूर्ण बात है।

उधर, अंग्रेज़ सरकार खुद समझने लगी थी कि अगर उसे भारत में लंबे समय तक शासन करना है तो अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोगों की बहुत ज़रूरत होगी। अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोगों के बगैर इतने लंबे-चौड़े प्रशासन का काम कौन संभालेगा? यह तो ठीक था कि इंग्लैंड के लोगों को भारत लाकर सरकारी अधिकारी बनाया जाएगा। पर छोटे से बड़े, सभी कामों के लिए अंग्रेज़ी अधिकारी व कर्मचारी रखें तो यह महंगा भी पड़ेगा। इसलिए, कम से कम बाबू, कर्मचारी व छोटे अधिकारियों के पदों के लिए अंग्रेज़ी में शिक्षित भारतीय लोगों की ज़रूरत पड़ेगी। यह सोच कर अंग्रेज़ सरकार ने भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा फैलाने की योजना बनाई। चूंकि इसे सबसे पहले लॉर्ड मैकॉले नाम के अंग्रेज़ अधिकारी ने बनाया था यह मैकॉले की शिक्षा नीति के नाम से जानी जाती है।

भारत में बड़ी संख्या में लोगों ने सरकार की मदद

से अंग्रेज़ी स्कूल व कॉलेज खोलने शुरू किए।

अंग्रेज़ी शिक्षा देने वाले इन स्कूलों में क्या पढ़ाया जाता था? अंग्रेज़ी भाषा, भारतीय भाषा, विज्ञान, भूगोल, इतिहास व गणित। सिर्फ ईसाई पादरियों द्वारा चलाए गए स्कूलों में अलग से बाइबल का अध्ययन भी कराया जाता था।

अंग्रेज़ी शिक्षा भारतीय लोगों को क्यों ज़रूरी लगी? और अंग्रेज़ सरकार को क्यों ज़रूरी लगी?

अंग्रेज़ी शिक्षा का असर

क्या तुम सोच सकते हो कि छोटे शहर और गांव के छात्र जब इन नए स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने जाते थे तो उनके मन पर कैसा असर होता था?

लाहौर के कॉलेज में पढ़ने वाले एक छात्र रुचि राम साहनी ने अपने अनुभव के बारे में लिखा - "मैं अपने शिक्षकों का एहसानमंद तो हूं ही पर यह भी कहना चाहता हूं कि लाहौर के शासकीय महाविद्यालय में आकर मैंने अपनी आंखों के सामने ज्ञान का ऐसा खज़ाना खुला पाया जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वैसे तो कॉलेज की सारी किताबें एक बड़े हॉल में रखी पंद्रह अलमारियों में आ जाती थी।

अंग्रेज़ी शिक्षा देने वाले नए स्कूल कॉलेज बने

नया ज्ञान, नए विचार

पर फिर भी, जिस आदमी ने कभी कोई पुस्तकालय न देखा हो, और जो ज्ञान का प्यासा हो, उसके लिए तो सरकारी स्कूल का छोटा पुस्तकालय और सरकारी कॉलेज का बड़ा पुस्तकालय अनमोल मोतियों से भरे सागर जैसा था - जिसमें कोई भी गोता लगा के ज्ञान के मोतियों को पा सकता था।"

स्कूल-कॉलेज के छात्र कक्षाओं के बाद पुस्तकालय से नई नई किताबें ले कर पढ़ते थे। इनमें इंग्लैंड व यूरोप में लिखी गई कई महत्वपूर्ण किताबें थी। यूरोप की नई दुनिया को समझने की तेज़ ललक और जिज्ञासा से भरे छात्र अंग्रेज़ी भाषा में लिखी किताबों को बड़ी मेहनत से बांचने की कोशिश करते थे, जबकि किताबें उनके कोर्स की भी नहीं थी।

रुचि राम साहनी लिखते हैं - "मैं और गुरुदत्त मिलकर जॉन स्टुअर्ट मिल की छोटी सी किताब को लाईन दर लाईन, पैरा दर पैरा पढ़ते जाते, उसके अर्थ को समझते जाते, उस पर चर्चा और बहस करते जाते। कभी-कभी तो हम घंटे भर में एक-दो वाक्य से ज़्यादा नहीं कर पाते थे क्योंकि या तो हम लेखक की बातों के असली मतलब को पकड़ नहीं पाते थे, या पूरा समय इसी चर्चा में निकल जाता था कि किताब की बातों को हम खुद कहां तक अपना सकते हैं।"

नए स्कूल-कॉलेज में पढ़े लोग अंग्रेज़ी विचारों और संस्कारों से बहुत प्रभावित हुए। उनकी तुलना में भारतीय समाज व धर्म के कई विचार व संस्कार इन लोगों को बहुत गलत लगने लगे। उन्होंने तरह तरह के सवाल खड़े किए। जैसे :

"ईश्वर मूर्तियों और मंदिरों में कैसे हो सकता है? क्या किसी ने कभी ईश्वर को देखा है? ईश्वर का रंग, रूप, आकार कैसे हो सकता है?"

"छुआछूत और जातपात के नियमों का क्या मतलब हैं? सब इंसान बराबर है - ईश्वर की संतान हैं। तब जाति का भेदभाव क्यों माना जाए?"

"औरतें क्या पुरुष के बराबर इंसान नहीं हैं? हमारे धर्म व समाज में औरतों के साथ इतना क्रूर व्यवहार क्यों होता है? हम अपने आपको सभ्य कहते हैं तो औरतों के प्रति हो रही क्रूरता को क्यों मानते जाएं?"

राजा राम मोहन राय ने ब्रह्मो समाज की शुरुआत की

लोगों के मन में उथल पुथल मची हुई थी। हर परंपरा व नियम को लोग उधेड़ उधेड़ कर देख रहे थे और विश्लेषण कर रहे थे। क्या गलत है? क्या सही है? समाज बिगड़ा कैसे? क्या हमेशा से बिगड़ा हुआ था? समाज सुधरेगा कैसे? ये सवाल लोगों के मन को मथने लगे थे।

अंग्रेज़ी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को क्या नई बात मिली?
इन छात्रों के मन में उठे सवालों पर विचार करो।
तुम इन सवालों के बारे में क्या सोचते हो?

समाज सुधार का अभियान

अंग्रेज़ अधिकारी और यूरोपीय पादरी भी भारतीय समाज की बुराइयों को उजागर कर रहे थे। अंग्रेज़ अधिकारियों को लगता था कि उन्हें नए कानून बना कर इन बुराइयों को रोकना चाहिए। ईसाई पादरियों को लगता था कि उन्हें ईसाई धर्म फैला कर भारतीय समाज को सुधारना चाहिए।

इस माहौल में कई पढ़े-लिखे भारतीय लोग भी अपने समाज की बुराइयों का विरोध करने के लिए एकजुट होने लगे। कुछ लोगों ने ईसाई धर्म अपनाया। कुछ लोगों ने ईसाई धर्म अपनाने का विचार किया पर फिर कुछ सोचकर रुक गए। ऐसे एक व्यक्ति थे महाराष्ट्र के मोरो विट्ठल वालावेकर, जो लिखते हैं - "मैं जब पढ़ता ही था तभी हिन्दू धर्म से मेरा विश्वास उठ गया और मेरा मन ईसाई धर्म की ओर मुड़ने लगा। पर मैंने सोचा कि नया धर्म अपनाने से पहले पुराने धर्म से उसकी तुलना कर लेनी चाहिए। इस तरह मैंने ईसाई धर्म का अध्ययन किया तो पाया कि हिन्दू धर्म की तरह उसमें भी कई अंध विश्वास हैं। तब मुझे लगा कि कोई भी धर्म भगवान की देन नहीं है।

दरअसल सब धर्मों की मूलभूत बातें एक सी हैं और ये हमें अपने विवेक से ही पता चलती हैं। यह प्राकृतिक धर्म हर जगह पाया जाता है अतः यही सच्चा धर्म होगा। इसका सार यह है कि :

ईश्वर एक ही है और हमें उसी को मानना चाहिए।
दूसरों की भलाई करना सबसे बड़ा पुण्य है।
दूसरों का अहित करना सबसे बड़ा पाप है।

इन सामान्य धार्मिक सिद्धांतों को तय करने पर हमने ईसाई बनने की योजना त्याग दी।"

मोरो विट्ठल जैसा अनुभव कई लोगो को हुआ। वे न तो ईसाई बने और न ही पांरपरिक हिन्दू रहे। उन्होंने अपने नए धार्मिक विचारो के अनुसार कार्य करने के लिए नए संगठन बनाए जैसे, बंगाल में ब्रह्मो समाज बना और महाराष्ट्र मे परमहंस मंड़ली बनी।

यूरोपीय विचारो से प्रभावित होने के बाद भी कई भारतीयों ने ईसाई धर्म क्यो नहीं अपनाया? यूरोपीय विचारो से प्रभावित कई भारतीय लोगों के विचारो में ऐसी क्या बात थी कि वे पांरपरिक हिन्दू धर्म भी नहीं मान पाए?

समाज सुधार का विरोध

पर क्या तुम सोच सकते हो कि इस प्रकार के नए धार्मिक विचार रखने वाले लोगो का समाज मे कितना विरोध हुआ? परमहंस मंडली के लोग बंबई मे गुप्त रूप से बैठकें करते थे। बैठक मे मंडली के सब सदस्य इक्ट्ठा हो कर, मिल कर भोजन करते थे। सदस्य अलग अलग जाति के थे। वे इकट्ठे भोजन करके जाति पाति के भेदभाव को तोड़ना चाहते थे। पर यह काम वे खुले आम नहीं कर पाते थे। इसलिए एक किराए के कमरे में गुप्त रूप से मिलते थे। जब मकान मालिक को यह सब पता चला तो उसने उन्हें कमरा देने से मना कर दिया।

मंडली के लोग सोचते थे कि जब उनके एक हज़ार सदस्य हो जाएंगे तभी वे खुल कर अपने विचारों का प्रचार करेंगे।

समाज के समाने खुल कर आने में मंडली की हिचकिचाहट सही भी थी। ब्रह्मो समाज के लोग खुली सभा में उपदेश देते थे। वे कहते थे कि सब धर्मो में अच्छाइयां हैं ..... ईसा मसीह व मोहम्मद पैगंबर महान संत थे। यह सुन कर सभा में बैठे लोग उठकर बाहर दौड़ पड़ते थे। भागते हुए लोग यह कहते जाते थे कि अरे रे रे - ये ब्रह्मो समाज वाले तो ईसाई हैं - अरे ये तो मुसलमान हैं .....।

इससे हम जान सकते हैं कि लोगों के बीच अपने विचार रखने मे समाज सुधारको को कितनी मुश्किल आती थी। कई माता पिता अपने बच्चों को अंग्रेज़ी स्कूल में भेजने से डरने लगे और अखबारों में ऐसी चिट्ठियां छपी जिनमें लोगों से अपील की गई कि वे अपने बच्चों को अंग्रेज़ी सीखने न भेजे क्योंकि ये बच्चे अपने धर्म मे विश्वास खो बैठते हैं और जाति प्रथा को ठुकराने लगते हैं।

परमहंस मंडली के सदस्यों का छिप कर जातपात के नियम तोड़ना तुम्हें कैसा लगा? क्या उन्होंने ठीक किया था?
अगर तुम ब्रह्मो समाज की सभा मे होते तो क्या उठ के चले जाते? लोगों के बैठक से चले जाने के बारे मे तुम क्या सोचते हो?
क्या आज भी माता पिता बच्चों को अंग्रेज़ी शिक्षा देने से कतराते हैं?

वास्तव मे उन दिनों परंपरावादी लोगों और नए विचार रखने वाले लोगों मे युद्ध सा छिड़ा हुआ था जो काफी हद तक आज भी जारी है। उन दिनो तो बाकायदा शास्त्रार्थ हुआ करते थे। नए और पुराने विचार के लोग किसी आम जगह पर आकर एक दूसरे से वाद विवाद करते थे और जनता खड़ी हो कर उनकी बाते सुनती थी। फिर दोनो पक्ष की बातें छोटी पुस्तको के रूप मे छाप कर बांटी जाती थीं।

आओ, ऐसे एक शास्त्रार्थ की झलक देखें जिसमें पांरपरिक धर्म का समर्थन करने वाले सती प्रथा को सही बता रहे हैं।

सती प्रथा पर शास्त्रार्थ

पंडित तर्कालंकार और राम मोहन राय के बीच सती प्रथा को ले कर बहस हुई। तर्कालंकार सती प्रथा के पक्ष में थे जबकि राम मोहन राय सती प्रथा खत्म करना चाहते थे।

तर्कालंकार ने कहा : "ऋषि अंगीरा ने कहा है कि जो औरत स्वर्ग की कामना करती है उसे पति की चिता में जल कर मर जाना चाहिए।"

राम मोहन : "पर, मनु और याज्ञवल्क्य ने कहा है कि पति की मृत्यु के बाद औरत को सरल व सादा जीवन बिताना चाहिए। उन्होंने विधवा औरत को सती होने के लिए नहीं कहा।

फिर, आप लोग तो औरत को पति की चिता के साथ बांध देते हैं। और ऊपर से खूब सारी लकड़ी जमा देते हैं ताकि वह चाहे भी तो उठकर न भाग सके। जब चिता को आग लगाते हैं तो औरत को बांसों से दबाए रखते हैं। यह तो सरासर स्त्री हत्या है। ज़बरदस्ती विधवा को जलाने की बात किस शास्त्र में लिखी है।"

पंडित तर्कालंकार : "यह बात तो किसी शास्त्र में नहीं लिखी पर हमारे देश में ऐसा करना एक बहुत पुरानी परंपरा है। इसलिए सती तो होनी ही चाहिए।"

राम मोहन : "सती हमारे देश में हर समय व हर जगह नहीं होती आई है। फिर भी, यह सोचिए कि चोरी व हत्या भी तो पुराने समय से हो रही है। क्या आप इन्हें भी सही मानेंगे? पुरानी होने के बावजूद हम चोरी व हत्या जैसे अपराधों का विरोध करते हैं। वैसे ही सती प्रथा स्त्री हत्या है - एक अमानवीय अपराध है। अतः इसे बंद करना चाहिए।"

अगर सब ऋषि मुनियों के शास्त्रों में यह लिखा होता कि विधवा औरत को सती हो जाना चाहिए तब तुम्हारे विचार में आज भी उस रीति का पालन होना चाहिए या नहीं? कारण भी बताओ।

सती के चारों तरफ लोग तलवारें लिए क्यों घूम रहे हैं?

तुम खुद ही सोचो क्या जीवन के अधिकार को ले कर स्त्री और पुरुष के लिए अलग अलग नियम होने चाहिए? किसी स्त्री की मृत्यु पर उसके पति से तो आशा नहीं की जाती कि वह अपनी पत्नी के साथ जल मरे। तो स्त्री के लिए सती होने की रीति क्या उचित है?

औरतों के लिए नए कानून

राम मोहन राय की कोशिशों के कारण अंग्रेज़ सरकार ने 1829 में सती प्रथा रोकने का कानून लागू किया। पर औरतों के साथ अन्याय करने वाली कई और रीतियां भी थीं। ऊंची कहलाने वाली जातियों में विधवा औरतों को दुबारा शादी करने की अनुमति नहीं थी। विधवा स्त्री को सफेद कपड़े पहनने होते थे, बाल कटाने पड़ते थे और उसे शुभ अवसर पर नहीं बुलाया जाता था।

जबकि विधुर पुरुष दुबारा शादी कर सकता था। राम मोहन राय जैसे अन्य समाज सुधारकों ने विधवाओं के हित में भी आवाज़ उठाई और मांग की कि विधवाओं को दुबारा शादी करने की अनुमति होनी चाहिए और इसके लिए कानून बनना चाहिए। यह अभियान छेड़ने वालों में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रमुख थे।

विधवा औरत

विधवाओं की दुबारा शादी की बात इसलिए बहुत महत्वपूर्ण बन गई थी क्योंकि छोटी बच्चियों की शादी कर दी जाती थी। बचपन में ही अगर वे विधवा हो जाएं तो पूरी लंबी ज़िंदगी भर उन्हें विधवा बन के दुख में जीना पड़ता था।

1856 में यह कानून बना कि विधवा बच्चियों की दुबारा शादी की जा सकती है।

कुछ प्रांतों के लोगों के बीच लड़की को जन्म के तुरंत बाद मार देने का भी रिवाज़ था। लड़की के जीवन का इतना भी मूल्य नहीं समझा जाता था कि उसे जीवित रहने दिया जाए।

नई जन्मी लड़की को मार देना भी ग़ैर कानूनी बनाया गया।

इस तरह लड़कियों व औरतों के प्रति क्रूरता और अत्याचार की कुछ मुख्य बातों पर सरकार ने कानूनी रोक लगाई। सरकार के अधिकारियों और राम मोहन राय, विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन, महादेव गोविंद रानाडे व कई अन्य समाज सुधारकों ने इन कानूनों को लागू करवाने की कोशिश की। धीरे-धीरे कई लोगों ने उनका समर्थन किया पर उनका विरोध करने वालों की भी कमी नहीं थी।

तुम तब होते या होती तो इन नई बातों का समर्थन करते/करती या विरोध? कारण बताओ। क्या आज भी ये कुरीतियां पाई जाती हैं?

महिलाओं की शिक्षा

महिलाओं के खिलाफ चल रही कुप्रथाओं पर रोक लगाने के अलावा, समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा के लिए अभियान शुरू किया। विद्यासागर जैसे लोगों को लगता था कि महिलाओं के जीवन का अपना महत्व है। उन्हें भी अपनी बुद्धि का विकास करने का अधिकार होना चाहिए। अतः महिलाओं की स्थिति सुधाराने के लिए उन्हें आधुनिक शिक्षा देना ज़रूरी है।

लड़कियां स्कूल जाने लगी

इन समाज सुधारकों के प्रयासों से लड़कियों के लिए कई स्कूल खोले गए। पर इन शालाओं का भी खूब विरोध हुआ। लोग सोचते थे कि लड़कियां पढ़ लिख जाएंगी तो वे अपने पति से दब के नहीं रहेंगी और घर के काम नहीं करेंगी। कुछ लोग तो यह मानते थे कि पढ़ी लिखी औरत का पति जल्दी मर जाएगा। जो मां बाप हिम्मत करके आगे आते थे और अपनी लड़कियों को पढ़ने भेजते थे उन्हें समाज से निकाल दिया जाता था। बहुत कोशिश व साहस करके लड़कियां पढ़ने आने लगीं।

पर आज भी, इतने सालों बाद लड़कों की तुलना में लड़कियां कम पढ़ाई जाती हैं।

इस बात के लिए तुम अपने स्कूल का उदाहरण दो। तुम्हारे घर में लड़कों को ज़्यादा पढ़ाने के लिए क्या तर्क दिया जाता है? क्या तुम्हें यह सही लगता है? आजकल लड़कियों को क्यों पढ़ाते हैं? चर्चा करो।

ऐसी एक लड़की की कहानी पढ़ें जिसने अंग्रेज़ो के समय मे औरतों के विकास के लिए बहुत हिम्मत से काम लिया।

पंडिता रमाबाई सरस्वती

रमाबाई का जन्म सन् 1858 में हुआ था। उनके पिता अनन्त शास्त्री महाराष्ट्र के एक पारंपरिक ब्राह्मण थे। उन्होंने अपनी पत्नी को संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। उनका इतना विरोध हुआ कि उन्हें गांव छोड़ कर जाना पड़ा और जंगल में कुटिया बना कर रहना पड़ा। वही रमाबाई का जन्म हुआ। अनन्त शास्त्री ने अपनी बेटी को भी संस्कृत सिखाई और शास्त्र व पुराण पढ़ाए। जब रमाबाई केवल 16 वर्ष की थी तो उनके माता पिता दोनों का देहांत हो गया। अनाथ रमाबाई व उनका भाई जगह जगह भटकते रहें - पर किसी ने उन्हें आश्रय नहीं दिया क्योंकि पढ़ी लिखी लड़की से सब

1889 में शुरू किया गया शारदा सदन

कतराते थे और उसे दोष देते थे, जैसे वह कोई पाप कर रही हो।

रमाबाई घूमती घूमती जब कलकत्ता पहुंची तो वहां उनका बहुत स्वागत हुआ। वहां राम मोहन राय, विद्यासागर आदि से प्रभावित कई लोग थे जो महिलाओं के बारे में नए विचार रखते थे। वहां रमाबाई ने कई जगहों पर महिलाओं की हालत सुधारने पर संस्कृत में भाषण दिए। कलकत्ता के लोगों ने उन्हें पंडिता व सरस्वती की उपाधि दी। अब वे पंडिता रमा बाई सरस्वती कहलाई। आगे जाकर रमाबाई ने ईसाई धर्म को अपनाया।

बंगाल में ही रमाबाई ने 22 वर्ष की उम्र में अपनी पसंद के एक आदमी से विवाह कर लिया। उन दिनों एक औरत का 22 वर्ष तक अविवाहित रहना और फिर अपनी पसंद के व्यक्ति से शादी करना बहुत ही अनहोना काम था।

रमाबाई ने अपना पूरा जीवन महिलाओं की मदद करने में लगा दिया। वे विधवा हो गई, उसके बाद भी वे बेझिझक अपने काम में लगी रहीं। वे अकेले इंग्लैंड व अमेरीका भी गईं ताकि वहां के महिला संगठनों के बारे में जान पाएं। भारत आकर उन्होंने विधवा महिलाओं को शिक्षित करने के लिए शारदा सदन नाम

तीर्थ यात्री के भेष में रमाबाई बृन्दावन से विधवा बच्चियों को बचाने चली।

का आश्रम व स्कूल शुरू किया। शारदा सदन में महिलाओं को कई हुनर व काम भी सिखाये जाते थे ताकि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

महिलाओं का अपने पैरों पर खड़ा होना रमा बाई को बहुत ज़रूरी लगता था। वे कहती थी कि महिलाएं सब कुछ चुपचाप सहती हैं क्योंकि वे पुरुषों पर निर्भर करती हैं। "पुरुष हम महिलाओं से ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे जानवरों के साथ किया जाता है। जब हम अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास करती हैं तो कहा जाता है कि हम पुरुषों के खिलाफ बगावत कर रही हैं और यह पाप है। दरअसल सबसे बड़ा पाप तो पुरुषों के कुकर्मों को सहना और विरोध न करना है।"

एक सभा में भाषण की शुरूआत रमाबाई ने इस प्रकार की - "आदरणीय सभागण, आपको मेरी कमज़ोर आवाज़ पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। भारत की औरतों को बोलने का मौका ही नहीं दिया गया है तो उनकी आवाज़ मज़बूत कैसे हो?"

उनकी शिकायत थी कि जिस तरह इंग्लैंड में भारत के लोगों की सुनवाई नहीं होती उसी तरह भारत के समाज में उसकी महिलाओं की सुनवाई नहीं होती।

औरतों की तरफ से पंडिता रमाबाई सरस्वती ने समाज से जो शिकायतें कीं, क्या वे तुम्हें उचित लगती हैं?
क्या कोई लड़की बताना चाहेगी कि लड़की होने के नाते उसे कक्षा में क्या परेशानियां होती हैं? अक्सर कक्षा में लड़कियां बहुत धीमे बोलती हैं या चुप रहती हैं। ऐसा क्यों? रमाबाई के विचार में इस बात का क्या कारण होता?

संत कवियों की परंपरा और आर्यों की वैदिक संस्कृति

अंग्रेज़ों के समय में जो नए विचार फैले उनसे प्रभावित हो कर कुछ लोग एक नये रास्ते पर चले। लेकिन समाज के अधिकतर लोगों को अपनी पुरानी परंपराओं और रीतियों से गहरा लगाव था और नई बातें अपनाने में उन्हें झिझक थी। सब के मन में यह प्रश्न था कि हमारी संस्कृति और परंपरा में क्या सुधारवादी बातें हैं ही नहीं? और क्या हमें उनसे प्रेरणा नहीं मिल सकती?

लोगों ने पाया कि पुराने समय में ऐसे संत कवि हुए हैं जिन्होंने समाज व धर्म की बुराइयों को उजागर किया है और नई भावनाओं के अनुसार लोगों को जीना सिखाने की कोशिश की है। संत रामदास, रैदास, नानक, कबीर, तुकाराम .... सभी ने जाति पाति की ऊंच नीच, ब्राह्मणवाद, मूर्ति पूजा, कर्मकांड का विरोध किया है और लोगों को एक ही ईश्वर की सीधी साधी भक्ति करना सिखाया है और सब मनुष्यों में समानता की बात सिखाई है।

समाज सुधारकों ने इन पुराने संतों की सीख की सहायता से समाज में नए विचार फैलाने की कोशिश की। महाराष्ट्र के प्रार्थना समाज के सुधारकों ने संत तुकाराम की वाणी का विशेष रूप से प्रचार किया।

एक तरफ संत कवियों से प्रेरणा लेने की कोशिश हुई और दूसरी तरफ कुछ लोगों ने आर्यों की वैदिक संस्कृति से भी समाज सुधार की प्रेरणा ली।

दयानंद सरस्वती नाम के एक सन्यासी थे। उन्होंने यह तर्क दिया कि वैदिक युग में आर्यों की जो संस्कृति थी उसमें आजकल की बुराइयां नहीं थी। जैसे वैदिक युग में मूर्ति पूजा, कर्म कांड, बाल विवाह, अछूत प्रथा, विधवा विवाह पर रोक

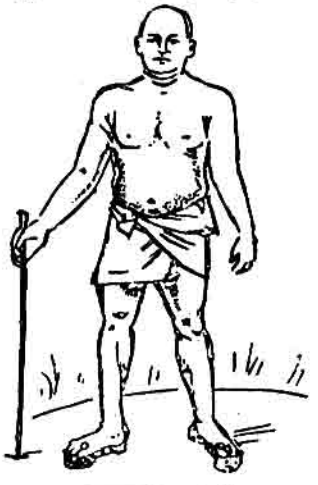
दयानन्द सरस्वती

जैसी रीतियां नही होती थी। सब बुराइयां बाद मे समय के साथ समाज मे आई हैं और पुराणो आदि ग्रंथो मे लिखी गईं। इसलिए उन्होने यह अभियान छेड़ा कि लोगो को आर्यो की वैदिक संस्कृति फिर से अपनानी चाहिए। इसके लिए उन्होने आर्य समाज नाम का संगठन बनाया।

यह संगठन पंजाब मे बहुत लोकप्रिय हुआ। उत्तर प्रदेश और राजस्थान में भी इसका असर रहा।

आर्य समाज ने 'संस्कार विधि' नाम की पुस्तक तैयार की। इसमे विस्तार से बताया गया कि जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के संस्कार वैदिक विधि से कैसे किए जाने चाहिए। जगह जगह छोटे-बड़े शहरों मे आर्य समाज की शाखाएं खोली गईं और उसके सदस्य बनाए गए। यह कोशिश की गई कि लोग वैदिक विधि को खुद समझे और उसी के अनुसार जीवन के सब संस्कार करें। धीरे धीरे बहुत संख्या मे लोग आर्य समाज का साथ देने लगे।

ज़ाहिर है इस बात का परंपरावादी ब्राह्मणो व पंडितो ने बहुत विरोध किया और उन्होने भी पांरपरिक हिन्दू धर्म, जिसे वे सनातन धर्म कहते थे, की रक्षा के लिए सनातन धर्म सभाएं बनानी शुरू कर दी।

एक तरफ जहां धार्मिक संस्कारो के मामले मे आर्य समाज का काफी विरोध होता रहा वही आर्य समाज के एक दूसरे कार्यक्रम को बहुत अधिक सफलता मिली। यह था दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज व स्कूल का कार्यक्रम। यह स्कूल आर्य समाज ने लाहौर मे स्थापित किया। इसका उद्देश्य था बच्चो को आधुनिक अंग्रेज़ी ज्ञान विज्ञान की अच्छी शिक्षा के साथ साथ संस्कृत और वेदो की शिक्षा भी देना। इससे लोगो के मन की दोनो इच्छाएं पूरी होती थी। उनके बच्चो को अंग्रेज़ी शिक्षा भी मिलती थी जिससे नौकरी और नया ज्ञान मिलता था और बच्चे अपने धर्म की बातें भी सीखते थे।

समाज सुधारकों ने नए विचार फैलाने के लिए भारतीय संस्कृति की किन बातों की सहायता ली?
संत कवियों और वैदिक संस्कृति की बातों का प्रचार करने पर भी परंपरावादी पंडितों व लोगों ने समाज सुधारकों का विरोध क्यों किया?
दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल लोकप्रिय क्यों हुआ?

मुस्लिम सुधार आंदोलन

जैसे सुधारवादी हिन्दुओं को ब्राह्मणों व पंड़ितो से लड़ना पड़ रहा था वैसे ही सुधारवादी मुसलमानो को मौलवियों से लड़ना पड़ा। अधिकांश मौलवी अंग्रेज़ी शासन के सख़्त खिलाफ थे और उन्होंने अंग्रेज़ी शिक्षा का भी कड़ा विरोध किया।

सर सय्यद अहमद खां

परंपरावादियो के विरोध के बावजूद कुछ मुसलमानो ने अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने लोगो के बीच नए विचार फैलाने की कोशिश की। नए विचारो व अंग्रेज़ी शिक्षा का आग्रह करने वालो मे सर सैयद अहमद खां और डा. इकबाल प्रमुख थे। इस प्रकार के लोगो ने मुस्लिम औरतो के बुरका पहनने का कस के विरोध किया। कुछ सुधारवादी मुसलमानो ने तो हठ कर के अपनी बेटियो का पर्दा हटवाया और उन्हें अपने साथ घर से बाहर लाने की कोशिश की।

हिन्दुओं की तरह मुसलमान लोगो को भी अंग्रेज़ी शिक्षा अपनाने मे अपने धर्म की रक्षा का डर रहता

था। मुसलमानों के बीच भी ऐसी शिक्षण संस्थाएं बनाने की कोशिश हुई जिससे कि लोगो को आधुनिक शिक्षा और अपने धर्म की मूल बातें - दोनों मिल सकें। मुसलमानो के लिए खोली जाने वाली संस्थाओं मे अलीगढ़ का अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और दिल्ली का जामिया मिलिया इस्लामिया व यूनानी आयुर्वेदिक कॉलेज प्रमुख थीं। इनमें मुस्लिम औरतों की शिक्षा को भी विशेष रूप से बढ़ावा देने की कोशिश हुई।

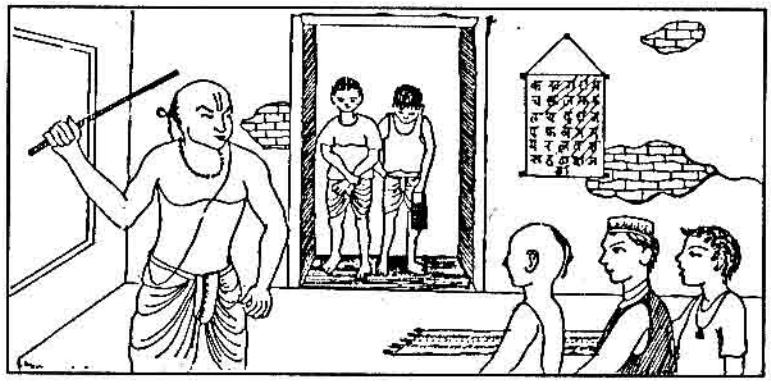

शूद्र मानी जाने वाली जाति के छात्रों को स्कूल से भगा दिया जाता था।

गैर ब्राह्मण जातियों के सुधार आंदोलन

तुमने देखा है कि जातपात, छूआछूत, कर्मकांडो का विरोध सभी समाज सुधारक कर रहे थे। पर ये समाज सुधारक मुख्य रूप से ऊंची कहलाने वाली जातियो के लोग थे। उन्ही दिनो नीची कहलाने वाली जातियो में भी समाज सुधारक हुए और इन जातियों के लोगो ने आगे आकर जातपात व कर्मकांडो की व्यवस्था को उखाड़ फैकनें का प्रयास किया।

आमतौर पर हिन्दू राजा जातपात के नियमों को सख्ती से लागू करवाते थे। पर अंग्रेज़ सरकार ने कोर्ट-कचहरी के जरिए जातपात के नियमो को लागू करने से इनकार कर दिया।

जोतिबा फूले

फिर ईसाई पादरियो द्वारा चलाए गए स्कूलो मे नीची कहलाने वाली जातियों के बच्चों को भी बराबर से शिक्षा देने की कोशिश हुई।

इस तरह के माहौल मे नीची कहलाने वाली जातियो के कई लोग पढ़ लिख कर आगे आए और बहुत साहस से समाज सुधार के काम मे लगे। इस प्रकार के समाज सुधार आंदोलन महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक तमिल नाडू, आंध्र प्रदेश में बड़े पैमाने पर हुए।

आओ महाराष्ट्र मे जोतिबा फुले के नेतृत्व में छिड़े आंदोलन के उदाहरण से कुछ बाते समझे।

जोतिबा फूले माली जाति के थे और सब्ज़ियां व फूल बेचने का धंधा करते थे। उन्होंने एक ईसाई स्कूल में कुछ साल शिक्षा पाई थी। जब वे बड़े हुए तो वे अपनी पत्नी के साथ महार व मांग जाति की लड़कियो के लिए स्कूल खोलना चाहते थे। इस बात से नाराज़ हो कर उनके पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया था।

जोतिबा फूले ने नीची मानी गई जातियो के जीवन की समस्याओं को गहराई से देखा और उन पर कई नाटक, पुस्तकें आदि तैयार की। उन्होने दिखाया कि गांव के ब्राह्मण चोरी छिपे माली और कुन्बी लोगों को कहते हैं कि वे अपने बच्चो को स्कूल नही भेजे, नही तो पटेल उनके साथ बुरा बर्ताव करेगा।

बहुत से ब्राह्मण शिक्षक स्कूल में शूद्र मानी जाने वाली जातियो के छात्रों को पीटते हैं, ताकि वे स्कूल

से भाग जाए और दुबारा कभी स्कूल न आएं।

गरीब लोगों को खामखाह ब्राह्मण पुजारियों की वजह से अनापशनाप खर्च करना पड़ता है।

सभी सरकारी दफतरों मे, नगर पालिकाओं में, छोटे-बड़े अधिकारी ब्राह्मण हैं। वे दूसरी जाति के गरीब किसानों को तरह तरह से तंग करते हैं।

जोतिबा फूले ने सत्यशोधक समाज नाम का संगठन बनाया। समाज ने मुख्य रूप से ये काम उठाए :

० नीची मानी गई जातियों के बच्चों के लिए अलग स्कूल, कॉलेज व छात्रावास की मांग व व्यवस्था करना जिनमें नीची मानी गई जातियों से ही शिक्षक निरीक्षक नियुक्त हों ताकि इन जातियों के बच्चे शिक्षित होकर समाज मे ऊपर उठ सकें।

० नीची मानी गई जातियों के छात्रों के बीच लेख, वाद विवाद, भाषण प्रतियोगिताएं करवाना ताकि उनकी झिझक टूटे और वे अन्य ऊंची मानी गई जाति के लोगों की तरह अपनी बाते ज़ोरदार ढंग से सब के सामने रख पाएं।

० नीची मानी गई जातियों को इस बात का बढ़ावा व मदद देना कि वे अपने सब धार्मिक संस्कार ब्राह्मणों के बगैर पूरे करे - लोग स्वयं धर्म के संस्कार कर लें या चाहें तो अपनी ही जाति का पुजारी रखें और इसे ही दक्षिणा दे।

यह अभियान काफी सफल भी रहा। जैसे, 1884 में एक अखबार ने खबर छापी की जुन्नार के 40 गांवों के शूद्रों ने 300 विवाह संस्कार ब्राह्मणों के बगैर संपन्न कर लिए हैं। 1873 की एक खबर मे छपा कि पुणे का 700 माली, कुन्बी, कुम्हार, बढ़ई व अन्य जातियों ने ब्राह्मणों से स्वतंत्र होने को अभियान छेड़ा हुआ है और वे अपने पूर्वजों के श्राद्ध संस्कार ब्राह्मणों के बिना ही पूरे कर रहे हैं।

ब्राह्मणों की दान दक्षिणा पर खर्च

इस तरह के विरोध से तंग आ कर कुछ ब्राह्मण पुजारी तो दक्षिणा लेने के हक का दावा करने के लिए कोर्ट कचहरी तक जा पहुंचे, पर वहां मुकदमे हार गए।

इन आंदोलनों के कारण नीची मानी गई जातियों के विकास और उनके हक व अधिकार की बात जोरदार ढंग से सामने आ पाई। आगे चल कर डा. अंबेडकर जैसे नेता भी इन जातियों पर हो रहे अन्याय को दूर करने के लिए लड़े।

स्वतंत्रता के बाद

समाज सुधारकों की कोशिशों से हमारे समाज मे बहुत से बदलाव आए, पर यह नहीं कहा जा सकता कि समाज सुधार पूरी तरह सफल हुए। तुम अपने आसपास आज भी बहुत सी बातें देखते हो जो अंग्रेज़ों के समय से सुधारवादी लोग बदलना चाह रहे थे। और आज भी लोग किसी न किसी तरह समाज में सुधार लाने की कोशिश कर रहे हैं।

तुम आजकल इन बातों को लेकर सुधार की क्या कोशिशें देखते हो - महिलाओं की स्थिति, जातपात का विरोध, धार्मिक कर्मकांड का विरोध ?

अंग्रेज़ों के समय से चले आंदोलन के कारण स्वतंत्र भारत के संविधान में महिलाओं और पुरुषों को बराबर के अधिकार दिए गए हैं। सब जाति व धर्म के लोगों

को समान माना गया है। नीची मानी गई जातियों पर हुए अन्यायों को दूर करने के लिए उनके हक में कई विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं - जैसे आरक्षण की व्यवस्था।

संविधान और कानूनों में इन बातों को मानना एक बात है और असलियत में इन्हें लागू करना दूसरी बात है। समानता और न्याय की बातों को असलियत में उतारने के लिए आज भी लोग जूझ रहे हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. भारत में किस तरह के लोग चाहते थे कि भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा फैले? वे ऐसा क्यों चाहते थे?
2. राजा राममोहन राय सरकार द्वारा संस्कृत पाठशाला खोले जाने के खिलाफ क्यों थे?
3. अंग्रेज़ सरकार भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा क्यों फैलाना चाहती थी?
4. अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों पर शिक्षा का क्या असर पड़ा - तुम अपने शब्दों में दो-चार वाक्य लिखो।
5. परमहंस मंडली के सदस्य ऐसे क्या सुधार करना चाहते थे कि उनका कड़ा विरोध हुआ?
6. जिस स्त्री का पति मर जाता था, उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता था? राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और रमाबाई जैसे सुधारकों ने ऐसी स्त्रियों की मदद में क्या किया?
7. महिलाओं की हालत सुधारने के लिए उन्हें शिक्षित करना क्यों ज़रूरी है - तुम अपने विचार लिखो।
8. पंडिता रमाबाई ने 'शारदा सदन' की स्थापना क्यों की? वहां क्या सिखाया जाता था?
9. स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार वैदिक काल में क्या-क्या कुरीतियां नहीं थी जो बाद में आयी?
10. दयानंद एंग्लो वेदिक कॉलेज में क्या-क्या पढ़ाया जाता था?
11. मुसलमानों में अंग्रेज़ी शिक्षा फैलाने के लिए क्या कदम उठाये गये?
12. जोतिबा फुले और सत्यशोधक समाज के लोगों नीची मानी जाने वाली जोतियों के उद्धार के लिए क्या-क्या कदम उठाये?